विचार बिन्दु

इस विश्व में स्वर्ण, गाय और पृथ्वी का दान देने वाले सुलभ है लेकिन प्राणियों को अभयदान देने वाले इन्सान दुर्लभ हैं। –भर्तृहरि

प्रदेश में बढ़ रहा मौसमी बीमारियों का प्रकोप : अलर्ट मोड पर सरकार

मौसम परिवर्तन और बीमारियों का चोली दामन का साथ है। सितम्बर का महीना समाप्त होते होते मौसम भी करवट लेता है। मानसून ने भी विदाई ले ली है। तापमान में भी घटत-बढ़त हो रहा है। प्रदेश में भारी बारिश से जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया था। ऐसे में बहुत से लोग मौसम में परिवर्तन को झेल नहीं पाते और तबीयत बिगड़ जाती है। विशेषकर जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है वे मौसमी बीमारियों का शिकार हो जाते है। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, यूपी, एमपी आदि प्रदेशों से मिली खबरों के मुताबिक मौसम परिवर्तन के साथ ही मौसमी बीमारियां और वायरल बुखार का प्रकोप पैर पसारने लगा है, जिसके चलते चिकित्सालय में मरीजों की संख्या में भारी इजाफा हुआ है। रोगियों को घंटों लाइन में लगने के बाद चिकित्सक को दिखाने के लिए नंबर आ रहा है। मौसम परिवर्तन के साथ चिकनगुनिया, डेंगू, वायरल बुखार, उल्टी-दस्त के रोगियों की संख्या बढ़ी है। मच्छरों का प्रकोप भी बीमारियां बढ़ाने में सहायक हो रहा है। डॉक्टरों के अनुसार तापमान में उतार-चढ़ाव के चलते मौसमी बीमारियां बढ़ी हैं।

मौसमी बीमारियों के खतरे को देखते ही राजस्थान में शासन प्रशासन पूरी तरह अलर्ट मोड पर है। स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर द्वारा आला अधिकारियों को दिए निर्देशों का असर देखा जा रहा है। मेडिकल टीमों की संख्या बढ़ाई जा रही है साथ ही हर जिले के काम की समीक्षा भी की जा रही है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव ने मौसमी बीमारियों की स्थिति की समीक्षा करते हुए इस संबंध में दिशा-निर्देश दिए है। सभी सम्बद्ध जिम्मेदार अधिकारियों को मौसमी बीमारियों की रोकथाम के लिए मिशन मोड में काम करने के निर्देश दिए गए है। निर्देशों में कहा गया है मौसमी बीमारियों के लिए नियंत्रण कक्ष को और सुदृढ़ बनाया जाए। निदेशालय स्तर पर स्थापित कन्ट्रोल रूम (0141-2225624) में समस्त जिलों से प्राप्त समस्याओं और शिकायतों का इन्द्राज कर 24 घण्टे में उनका निस्तारण किया जाए। इसी प्रकार प्रत्येक जिले में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय पर स्थापित कन्ट्रोल रूम में दर्ज समस्याओं का भी 24 घण्टे में समाधान सुनिश्चित करें। डेंगू, मलेरिया, चिकुनगुनिया, स्क्रबटायफस आदि मौसमी बीमारियों से प्रभावित क्षेत्रों में रेपिडरेस्पान्स टीमें भ्रमण कर गम्भीर रोगी की जांच एवं उपचार प्रदान करें। आवश्यकता होने पर चिकित्सा संस्थान में रैफर करें और बचाव व नियंत्रण संबंधी कार्यों यथा एन्टीलार्वल, मच्छर रोधी, फोगिंग, सोर्स रिडक्शन आदि गतिविधियों की गुणवत्ता भी सुनिश्चित करें। राजधानी के सवाई मानसिंह अस्पताल में मौसमी बीमारी के रोगियों के लिए अलग से ओपीडी का संचालन किया जाएगा। आपातकालीन सेवाओं के सामने वाहन शाखा और क्रिटिकल केयर ब्लॉक के पास सुबह 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक ओपीडी का संचालन किया जाएगा।

शुरुआत में चिकनगुनिया में तेज बुखार, लगातार सिरदर्द, आंखों से पानी आना और थकान होना इसकी विशेषता है। इस बीमारी में भले बुखार उतर जाए, लेकिन थकान और सिरदर्द बना रहता है। अधिकांश रोगियों को जोड़ों में दर्द की शिकायत भी होती है। यह दर्द हफ्तों और महीनों के लिए बना रह सकता है। तेज बुखार, सिर दर्द, मतली आना, बदन दर्द और लाल चकत्ते होना डेंगू की पुष्टि करता है।

प्रदेशभर से मिली जानकारी के मुताबिक मौसम में आये बदलाव के साथ ही मौसमी बीमारियों ने घर-घर दस्तक दे दी है। घर-घर में मौसमी बीमारियां से पीड़ित लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। अस्पतालों में बच्चों से बुजुर्ग तक इलाज के लिए लाइन में लगे देखे जा सकते है। सरकार ने स्वास्थ्य विभाग को पहले ही अलर्ट कर दिया था। राजस्थान में डेंगू बुखार ने कहर मचा रखा है। अस्पतालों में डेंगू पीड़ितों की संख्या कम होने का नाम नहीं ले रही है। सरकारी उपाय नाकाफी साबित हो रहे है। यही स्थिति उत्तर भारत के अन्य प्रदेशों की है।एक मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है मच्छरों ने घर घर में आतंक फैला रखा है जिसकी चपेट में बच्चे से बुजुर्ग तक आ रहे है। सर्वाधिक मानसूनी वर्षा वाले प्रदेशों में मच्छर जनित बीमारियों के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने अलर्ट जारी किया है। सबसे अधिक प्रभावित जिलों की लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है।

कहते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में कंस्ट्रक्शन बढ़ा है। यह मच्छरों से होने वाली बीमारी का एक कारण है। कंस्ट्रक्शन साइट्स पर मच्छर ज्यादा पनप रहे हैं। वहीं पहले के मुकाबले सर्विलांस बढ़ा है। इस वजह से भी डेंगू के मामले अधिक दर्ज हो रहे हैं। बताते हैं कि न तो डेंगू, चिकनगुनिया की कोई दवा है और न ही वैक्सीन। चिकनगुनिया और डेंगू मच्छर के काटने की वजह से होते हैं। मादा एडिसएजिप्टी मच्छर के काटने कारण माना जा रहा है। लेकिन कुछ मामलों में, एडीज मच्छर का काटना भी इस बीमारी की वजह मानी जा रही है। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि 5 अलग-अलग प्रकार के वायरस इन मच्छरों से फैल रहे हैं, जो इस बीमारी का कारण बन रहे हैं। डेंगू गैर-संक्रामक है, यह एक मरीज से सीधे किसी अन्य व्यक्ति में नहीं फैल सकता। चिकनगुनिया वायरस भी मच्छर ही द्वारा किया जाता है। हालांकि दोनों बीमारियों की पहचान विशिष्ट वायरस से हो सकती है। शुरुआत में चिकनगुनिया में तेज बुखार, लगातार सिरदर्द, आंखों से पानी आना और थकान होना इसकी विशेषता है। इस बीमारी में भले बुखार उतर जाए, लेकिन थकान और सिरदर्द बना रहता है। अधिकांश रोगियों को जोड़ों में दर्द की शिकायत भी होती है। यह दर्द हफ्तों और महीनों के लिए बना रह सकता है। तेज बुखार, सिर दर्द, मतली आना, बदन दर्द और लाल चकत्ते होना डेंगू की पुष्टि करता है। रोगियों की संख्या में डेंगू बुखार एक रक्तस्त्रावी जो अनिश्चितता के बादल कम ब्लड प्लेटलेट्स का स्तर और रक्त प्लाज्मा के रिसाव में परिणाम का कारण बनता है। डेंगू भी भारी रक्तस्त्राव मौत का कारण बन सकता है। डेंगू और चिकनगुनिया के बीच का अंतर जानने के लिए रोगी के खून की जांच जरूरी है। इससे खून में मौजूद विशिष्ट वायरस का पता लगा सकते हैं।

–अतिथि संपादक,
बालमुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 28 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, अश्लेषा नक्षत्र रात्रि 3:38 तक, सिद्ध योग रात्रि 11:50 तक, बालव करण दिन 2:50 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:38 से सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज इन्दिरा एकादशी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:51 से 9:20 तक, चर 12:18 से 1:47 तक, लाभ-अमृत 1:47 से 4:44 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:22, सूर्यास्त 6:13

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। भाई-बंधुओं के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ-मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

कर्क
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन ठीक रहेगा। परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

मीन
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

केंद्र सरकार ने कभी नहीं चाहा कि मिडिल इनकम ग्रुप की माली हालत सुदृढ़ बने, क्यों?

प्रो. वीर बहादुर सिंह

गरीब, अति गरीब और निम्नतम आय वर्ग निम्न आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग सदैव चुनाव के समय सरकार का ध्यान आकर्षित करते रहे हैं। इस तथ्य के पीछे सरकार की मंशा या नीयत पारदर्शी कभी नहीं रही। कारण साफ़ है वोट बैंक कैसे सुदृढ़ बने और आगे भी बना रहे? अब हालात ऐसे हैं कि जैसे-जैसे संसाधन बढ़ रहे हैं, सरकार में बैठे वित्त मसलों के लोग इस फिराक में रहते हैं कि संसाधनों का उपयोग कैसे सीमित हो और कमाऊ भी बना रहे? सरकार में ऐसे अनेक बड़े संसथान हैं जो हर प्रकार का अन्वेषण करते हैं और सतत करते भी रहते हैं। उदाहरण के लिए सांख्यकी, कृषि सांख्यकी, आर्थिक सर्वे, विज्ञान, मेडिकल, भूमि, फारेस्ट, वाइल्ड लाइफ आदि-आदि। इनके अतिरिक्त अन्य दूसरे विभाग भी अपने-अपने उद्देश्य के अनुसार सर्वे बड़े क्षेत्र से लेकर छोटे स्तर तक सर्वे करते हैं ताकि मूल अध्ययन, तत्पश्चात परीक्षण करने से पहले वर्तमान स्थिति का ज्ञान हो सके। तत्पश्चात सतही आंकलन कर परीक्षण आरम्भ कर फिर देखा जाये कि परीक्षण के उपरांत उस क्षेत्र में क्या परिवर्तन आया और कितना? अनुसन्धान में यह प्रक्रिया सदैव अपनाई जाती है। केवल प्रयोगशालाओं में परीक्षणों को छोड़कर। ऐसे सभी अन्वेषण करने में सांख्यकी के महत्वपूर्ण टूल्स अपनाये जाते हैं।

कृषि विश्वविद्यालयों में तो सांख्यकी की शिक्षा और उसका उपयोग दोनों सिखाये जाते हैं। बाद के प्रोफेशन में अनुसन्धान लगभग हर विषय में होता रहता है। इससे प्राप्त आंकड़े रिसर्च पत्रिकाओं में समय-समय प्रकाशित भी होते रहते हैं। कृषि और किसानों से सम्बंधित तो एक परियोजना वर्षों से पूरे देश में चालू है जिसके आंकड़े सम्बंधित मंत्रालय उपयोग करते हैं। कृषि उपज मूल्य और लागत से किसान की माली हालत का भी आंकलन वस्तुत: हो जाता है। इन्ही सब अन्वेषणों के आधार पर देश में आर्थिक आधार पर लोगों का वर्गीकरण भी किया हुआ है। जनता को दिखाने के लिए सरकार अनेक योजनाएं गरीबों और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए चलाती है परन्तु वास्तविक लाभ उन लोगों तक पहुंच पाता है अथवा नहीं यह एक गूढ़ रहस्य है और संदेहास्पद भी। एक बात मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि हज़ारों रुपये उन्हें देने के बाद भी गरीवी और गरीव देश में कम नहीं होते? भ्रष्टाचार भी इसमें अहम कार्य निभाता है।

देश की प्रबंध व्यवस्था में भ्रष्टाचार कपड़ा बुनने की भांति इतना मिल गया है कि उसे निकालने का अर्थ कपड़े को फाड़ना ही है। सांख्यकी कहती है कि किसी भी परियोजना को शुरू करने से पूर्व वर्तमान स्थिति का आंकलन करना जरुरी है जिससे कुछ समय बीतने के बाद पुन: आंकलन कर यह सुगम हो जाता है कि परियोजना से कितना अंतर आया? यह सरकार नहीं कराती और कराती भी है तो उसे प्रकाशित नहीं करती। इसलिए सब कुछ अँधेरे में ही चलता रहता है। अब यह भी जान लिया जाय कि विकसित किस्मे और वैज्ञानिक तकनीक कहाँ से उपजती है? यह सब होता है कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा किये गए अनुसन्धान और प्रसार शिक्षा के माध्यम से। पाठकों को यहाँ जानना जरुरी है कि अधिकांश संस्थानों में अनुसन्धान और प्रसार कार्य करने वाले वैज्ञानिक हैं नहीं कुछ समय पहले किये एक आंकलन से पता चला कि इन कार्यों को करने वालों के 60 से 75 प्रतिशत पद वर्षों से रिक्त चल रहे हैं। फिर वांछित काम कौन कर रहा है? वस्तुत: काम हो ही नहीं रहा है।

प्रधानमंत्री ने दो कार्य प्रशंसनीय किये, एक गांव में शौचालय बनवा दिए जिससे कम से कम महिलाओं को खुले में शौच नहीं जाना पड़े और दूसरे जिन गरीवों के पास मकान नहीं थे उन्हें पक्के कमरे बनवा कर दिए। यथेष्ट क्या है एक गरीब से गरीब परिवार या मध्यम परिवार में खर्चा कितना होता है और कितना चाहिए? पति-पत्नी और दो बच्चे एक बालक और एक बालिका के उचित पढ़ने-लिखने, वस्त्र, ड्रेस आदि पर कितना खर्चा होता है इसका आंकलन क्यों नहीं किया जाता? सरकार ने टयूशन फीस माफ़ कर दी फिर भी उससे कहीं अधिक और खर्चे बच्चों की शिक्षा के लिए खर्च करने पड़ते हैं। सरकार में बैठे नेता और प्रशासनिक अधिकारी को इस पक्ष पर कभी सोचने की जरुरत नहीं पड़ती। वास्तव में उनमे से अनेक ने गांव और वहां का रहन-सहन नजदीक से देखा ही नहीं? ग्रामीण जीवन में सादगी और मनुष्य की सरलता ही सर्वोपरि है जो हमें शहर में नहीं दिखाई देती। मेरे एक अनुमान के अनुसार दो बच्चों को शहर में पढ़ाने पर आवास से लेकर, शिक्षा, मेडिकल सुबिधा, ड्रेस साफ़ सफाई खाना, आवागमन आदि अनेक मदों में खर्चा जरुरी होता है अन्यथा बच्चा इनके अभाव में कुंठित मानसिकता से ग्रसित हो जाता है।

बाजार की हालत देखते हुए एक बालक को दसवीं से आगे की पढ़ाई के लिए लगभग आवास के अतिरिक्त दस से पंद्रह हज़ार रुपयों की जरुरत होती है, शेयर आधार पर आवास को मिला कर यह खर्चा बीस हज़ार तक आ जाता है। मैं आर्थिक मामलों के लोगों से जानना चाहता हूँ कि इन खर्चों को देखते हुए एक ग्रामीण अपने दो बच्चो के लिए तीन लाख क्या वार्षिक कमा लेता है? फिर उसका अपना गांव का खर्चा अलग? एक ग्रामीण की वार्षिक आय इस हिसाब से छ: लाख होनी चाहिए तभी वह अपने दो बच्चों को कुछ शिक्षा दिलवाने में सक्षम हो सकता है अन्यथा नहीं।

सरकार किसानों के महा पड़ाव की भाषा समझती हैं अन्य कोई नहीं। गावो के लोगों को बुलेट ट्रैन, स्पेस शिप, जैसी सुविधाएँ नहीं चाहिए उन्हें तो मूलभूत सड़क, समुचित परिवहन साधन, मेडिकल व अन्य शिक्षा सुविधाएँ गांव में ही प्रदान करनी चाहिए ताकि आगे भी वे बच्चों की शिक्षा के प्रति सतत प्रयासरत रहें उनकी वार्षिक आय वर्तमान बाजार के अनुसार 12 लाख रुपये से कम तो होनी नहीं चाहिए। गरीब शहरों में भी रहते हैं इसलिए यह आय सीमा दोनों परिवेशों में लागू हो। वैसे तो मैं आयकर प्रावधानों का विरोधी हूँ। जब सरकार की तिजोरी केवल जी एस टी से उफन रही हो तो अनावश्यक खर्चों पर लगाम लगाकर आयकर प्रावधान क्यों नहीं बिलकुल समाप्त कर देती? वैसे भी आयकर के दो भिन्न प्रारूपों से यह स्पष्ट होता है कि सरकार को अधिक धन संग्रह टैक्स के माध्यम से आवश्यक नहीं रहा, क्योंकि छोटी बचतों को अब सरकार प्रोत्साहन देना बंद कर दिया है और आयकर में पूर्व में वर्षों से दी जा रहीं छोटी बचतों से सरकार को अब धन प्राप्त करने की जरुरत नहीं रही।

इसलिए मेरी अनुसंशा है कि आयकर प्रावधान को ही समूल हटा लिया जाये। वैसे भी हमारे सम्मानीय तो आयकर से पूर्णत: मुक्त हैं भले ही वे एक से अधिक पेंशन वेतन अलग और अन्य भत्ते ले रहे हैं। तो सरकार दरियादिली दिखाते हुए सभी के लिए आयकर समाप्त करे। समय की यही मांग है और समानता के लिए उचित भी है। पेंशन पर आयकर को मुक्त करने की मांग देश में सोशल मीडिया पर पहले से ही चल रही है। आयकर कार्य से मुक्त हुए सभी कर्मचारियों को सरकार अपनी कई योजनाओं में समायोचित कर सकती है हां मलाईदार पद संभवत: न मिले। अधिक मलाई बहुधा शरीर में वसा एकत्रित कर हृदयाघात का कारण बनती है। सरकार को अपने अनेक गैरजरूरी खर्चे और दिखावा बंद करना उचित होगा। देश की रफ़्तार हमारे प्रधान मंत्री अंतर्क्षीय यान जैसी लेकर चलन चाहते हैं जो अधिकांश जनता झेल नहीं पायेगी जमीन पर लेकर चलना ही हित कर है।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह, पूर्व कुलपति एवं खाद्य विज्ञ, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रदेश के कई जिलों में समान पात्रता परीक्षा शांतिपूर्ण संपन्न

अजमेर/दौसा, (कासं)। राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड की ओर से समान पात्रता परीक्षा 2024 (यूजी स्तर) शुक्रवार आयोजित की गई। अजमेर में परीक्षा के लिए 64 सेंटर बनाए गए। यह परीक्षा दो पारियों में आयोजित की गई। परीक्षा के लिए 19 हजार 585 परीक्षार्थी हैं। शहर में परीक्षा सेंटर बनाए जाने से कई कई स्कूलों में शुक्रवार को अवकाश घोषित किया गया है। गहन जांच के बाद ही परीक्षार्थियों को प्रवेश दिया गया। परीक्षा देने आए अभ्यर्थी सुबह से ही परीक्षा केंद्रों पर कतार में नजर आए। कई केंद्रों पर तो लंबी-लंगी कतारें देखी गई।

बोर्ड की ओर से जारी की गई गाइडलाइन के तहत अभ्यर्थियों को परीक्षा शुरू होने से 1 घंटे पहले प्रवेश दिया गया। पहली पारी में परीक्षा सुबह 9 बजे से शुरू हुई। ऐसे में अभ्यर्थियों को सुबह 8 बजे तक प्रवेश दिया गया। इसी प्रकार दूसरी पारी की परीक्षा दोपहर 3 बजे शुरू हुई इसमें अभ्यर्थियों को प्रवेश दोपहर 2 बजे प्रवेश दिया गया। अजमेर जिला प्रशासन की ओर से 10 फ्लाइंग स्क्वाड बनाए गई। फ्लाइंग स्क्वाड में 3-3 लोगों को शामिल किया है। हर एक टीम में एक-एक आरएएस-आरपीएस अधिकारी और एक जिला शिक्षा विभाग के अधिकारी शामिल रहे। कुल 10 टीमों में 64 अधिकारी थे। फ्लाइंग स्क्वाड टीम ने सभी केंद्रों पर नजर बनाए रखी। शुक्रवार व शनिवार को आयोजित होने वाली इस समान पात्रता परीक्षा में प्रदेशभर में कुल 13 लाख 4 हजार 142 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए हैं।

दौसा में 29 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित हुई सीईटी परीक्षा :- दौसा में शुक्रवार को राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित समान पात्रता परीक्षा 'सीईटी' का आयोजन जिले के 29 परीक्षा केंद्रों पर हुआ। परीक्षा केंद्रों पर परीक्षार्थियों को कड़ी सुरक्षा जांच के बाद प्रवेश दिया गया, जबकि पुलिस की निगरानी में पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई गई। इसके साथ ही पेपर की सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए। परीक्षा समन्वयक एडीएम सुमित्रा पारीक ने जानकारी दी कि 29 केंद्रों में से 18 निजी केंद्रों पर परीक्षा का आयोजन किया गया, जो दो पारियों में हुआ। प्रत्येक पारी में 10,128 परीक्षार्थियों का पंजीयन हुआ।

परीक्षा में पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पांच सतर्कता दलों का गठन किया गया, जिनमें एक प्रशासनिक, एक पुलिस और एक शिक्षा सेवा का अधिकारी शामिल था। शनिवार को भी दो पारियों में परीक्षा आयोजित की जाएगी, जहां सुरक्षा और निगरानी की विशेष व्यवस्था रहेगी।

झीलों की नगरी आगामी दिनों में विश्व पर्यटन का हब बनेगी : सांसद सी.पी. जोशी

उदयपुर, (कासं)। झीलों की नगरी आगामी दिनों में विश्व पर्यटन का हब बनेगी। आगामी दिनों में शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट का शुभारंभ होगा, जिससे देशी एवं विदेशी पर्यटन में लाभ होगा। मेवाड़ विश्व पर्यटन में सांस्कृति, आध्यात्मिक धरोहर का महत्वपूर्ण केन्द्र है। इससे संबंधित विरासत के सभी घटकों की सुरक्षा करना आम समाज की जिम्मेदारी है। ये विचार शुक्रवार को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस पर राजस्थान विद्यापीठ के संघटक डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेवल, ट्यूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट एवं मिनिस्ट्री ऑफ ट्यूरिज्म भारत सरकार, रामी रॉयल के संयुक्त तत्वावधान में प्रतापनगर स्थित आईटी सभागार में आयोजित समारोह में पूर्व प्रदेशाध्यक्ष एवं चितौड़ सांसद सी.पी. जोशी ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए।

विद्यापीठ में अंतरराष्ट्रीय पर्यटन दिवस पर आयोजित सेमीनार में चितौड़ सांसद सी.पी. जोशी, कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत आदि मौजूद रहे।

सांसद जोशी ने कहा कि भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है जिसको आने वाली पीढ़ी में रूपांतरित करने की जरूरत है। आज हमारे देश में विलेज ट्यूज्म बढ़ रहा है जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर बढ़े हैं। उन्होंने कहा कि इस दिशा में सरकार अपना काम कर रही है। उन्होंने कोरोना का उदाहरण देते हुए बताया कि बहुत से विकसित राष्ट्र संघर्षरत थे क्योंकि केवल सरकारें कार्यशील थी, लेकिन भारत में सरकार के साथ साथ समाज भी खड़ा था जिससे भारत इस संघर्ष से सफलतापूर्वक विजय हासिल कर सका जिसका प्रमाण पूरे विश्व ने देखा। उन्होंने कहा कि जहां सरकार के साथ समाज का साथ हो वहां कार्य स्वत: सिद्धी को प्राप्त हो जाता है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि भारतीय संस्कृति बेजोड़ व जीवंत है भारत की वैश्विक संस्कृति व धरोहर सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि पर्यटन से देश में रोजगार के अवसर एवं जीडीपी में पर्याप्त योगदान मिलता है। पर्यटन के विकास में भारत सरकार के विभिन्न आयाम कार्यरत है जिसमें राष्ट्रीय होटल प्रबंधन, भारतीय पर्यटन विकास आदि प्रमुख है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि उदयपुर देश, दुनिया में पर्यटकों के बीच सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां आने वाले मेहमानों को इतिहास, संस्कृति और भारतीय परम्परा के साथ प्रकृति के खुबसूरत नजारे, झीलें, पहाड़ और जंगलों की त्रिवेणी देखने को मिलती है। जहां पर्यटकों को देश भर के अलग अलग हिस्सों में घूमकर देखने को मिलता है, वही मेवाड में एक ही क्षेत्र में उसका सम्मिश्रण मिल जाता है। इससे पूर्व विशिष्ठ अतिथि बीएन संस्थान के प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह रूपाखेड़ी, रामी रॉयल के संस्थापक अशोक जैन, महाराणा प्रताप स्मारक समिति के उपाध्यक्ष युद्धवीर सिंह, प्रो. बीएस राठौड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

■ भारत की वैश्विक संस्कृति, धरोहर सम्पूर्ण विश्व में विख्यात : प्रो. एसएस सारंगदेवोत

इस अवसर पर एस्टकोर्ट गाईड कमल सिंह, डीएस झाला, दिग्विजय सिंह शक्तावत, शौर्यगढ़ के जीएम रूपम सरकार, रामी रॉयल के जीएम दिनेश उपाध्याय, लाभगढ़ रिसोर्ट के जीएम उज्जवल मेनारिया, रजिस्ट्रार डॉ. तरूण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, प्रो. प्रेमसिंह रावलोत, डॉ. सुनिता मुर्डिया, डॉ. शिल्पा कंठालिया, डॉ. नीरू राठौड़, डा. दिनेश श्रीमाली, प्रकाश आचार्य, यामिनी राठौड़ सहित पीएचडी स्कॉलर्स एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने श्रमदान किया

कोटा, (निसं)। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के तहत शिक्षा एवं पंचायतीराज मंत्री मदन दिलावर ने शुक्रवार को अपने विधानसभा क्षेत्र रामगंजमंडी में प्राइवेट बस स्टेंड के पास श्रमदान के दौरान झाड़ू लगाई। शिक्षा मंत्री के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने भी श्रमदान किया।

शिक्षा मंत्री ने लोगों को हाड़ौती भाषा में स्वच्छता रखने एवं पॉलीथिन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की शपथ भी दिलाई। उपस्थित लोगों ने हाथ खड़े करके पॉलीथिन और डिस्पोजल आइटम का प्रयोग न करने की शपथ ली। दिलावर ने पॉलीथिन और डिस्पोजल आइटम के उपयोग नहीं करने की सलाह देते हुए कहा कि यदि हमें अपने परिवार को और समाज को स्वस्थ और निरोगी रखना है तो पॉलीथिन और प्लास्टिक के इस्तेमाल को पूरी तरह बंद करना होगा।

अभियान के तहत खैराबाद पंचायत समिति प्रधान कलावती मेघवाल, उपखंड अधिकारी नीता वसीटा, नगर पालिका रामगंजमंडी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपक नागर, तहसीलदार, ब्लॉक विकास अधिकारी सहित अन्य अधिकारी, स्कूली बच्चों, स्काउट गाइड के स्वयंसेवक सहित आमजन ने श्रमदान किया।

शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने झाड़ू लगाकर स्वच्छता का संदेश दिया।